॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

श्री सूक्त

विषय-सूची

श्रीसूक्त 3

श्री सूक्त के ऋषि..... 3

श्री सूक्त का छन्द..... 3

श्री सूक्त के देवता 3

श्री सूक्त का विनियोग..... 4

श्री सूक्त के मंत्रों का क्रम 4

श्री सूक्त का विषय - 4

श्री सूक्त में वर्णित श्री देवी के नाम..... 6

श्री सूक्त में माता के स्वरूप का वर्णन 7

॥ श्रीसूक्तम् ॥..... 9

॥ लक्ष्मी सूक्तम्॥ 14

श्रीसूक्त

श्रीसूक्त ऋग्वेद का खिल सूक्त है । ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के अन्त में यह उपलब्ध होता है । सुक्त में मन्त्रों की संख्या पन्द्रह है। सोलहवें मंन्त्र में फलश्रुति है । बाद में ग्यारह मन्त्र परिशिष्ट के रूप में उपलब्ध होते हैं । इनको लक्ष्मीसूक्त के नाम से स्मरण किया जाता है ।

श्री सूक्त के ऋषि

श्री सूक्त के आनन्द, कर्दम, श्रीद और चिक्लीत यह चार ऋषि हैं। इन चारों को श्री का पुत्र बताया गया है । श्रीपुत्र हिरण्यगर्भ को भी श्रीसूक्त का ऋषि माना जाता है।

श्री सूक्त का छन्द

श्री सूक्त के मंत्र अनुष्टुप छन्द में हैं। केवल चौथा मन्त्र बृहती में और पांचवाँ और छटा मन्त्र त्रिष्टुप छन्द में है । अन्तिम मन्त्र का छन्द प्रस्तारपंक्ति है।

श्री सूक्त के देवता

श्री शब्द वाच्या माता लक्ष्मी इस सूक्त की देवता हैं ।

श्री सूक्त का विनियोग

इस सूक्त का विनियोग माता लक्ष्मी की आराधना, जप, होम आदि में किया जाता है । महर्षि बोधायन, वशिष्ठ आदि ने इसके विशेष प्रयोग बतलाये हैं । श्री सूक्त की फल श्रुति में भी इस सूक्त के मन्त्रों का जप तथा इन मन्त्रों के द्वारा होम करने का निर्देश किया गया है।

श्री सूक्त के मंत्रों का क्रम

आराधना क्रम में श्रीसूक्त के पन्द्रह मन्त्रों का इस क्रम से विनियोग किया जाता है- १ - आवाहन , २- आसन, ३- पाद्य, ४ - अर्घ्य, ५ - आचमन , ६ - स्नान , ७-वस्त्र, ८- आभूषण , ९ - गन्ध, १० - पुष्प, ११ - धूप , १२- दीप , १३- नैवेद्य, १४- प्रदक्षिणा , १५- उद्वासन।

श्री सूक्त का विषय -

श्रीसूक्त के मन्त्रों का विषय इस प्रकार है-

१- भगवान से लक्ष्मी को अभिमुख करने की प्रार्थना
२- भगवान् से लक्ष्मी को अभिमुख रखने की प्रार्थना
३ - लक्ष्मी से सान्निध्य के लिये प्रार्थना
४ - लक्ष्मी का आवाहन

५ - लक्ष्मी की शरणागति एवं अलक्ष्मीनाश की प्रार्थना
६ - अलक्ष्मी और उसके सहचारियों के नाश की प्रार्थना
७ - माङ्गल्यप्राप्ति की प्रार्थना
८ - अलक्ष्मी और उसके कार्यों का विवरण देकर उसके नाश की प्रार्थना
९ - लक्ष्मी का आवाहन
१० - मन, वाणी आदि की अमोघता तथा समृद्धि की स्थिरता के लिए प्रार्थना
११ - कर्दम प्रजापति से प्रार्थना
१२ - लक्ष्मी के परिकर से प्रार्थना
१३- लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिये पुनः भगवान् से प्रार्थना
१४ - पुनः लक्ष्मी के नित्य सान्निध्य के लिये भगवान् से प्रार्थना
१५- भगवान् से लक्ष्मी के आभिमुख्य की प्रार्थना
१६ - फलश्रुति

परिशिष्ट (लक्ष्मीसूक्त)के मन्त्रों के विषय हैं-

१ - सौख्य की याचना
२-समस्त कामनाओं की पूर्ति की याचना
३ - सान्निध्य की याचना
४ - समृद्धि के स्थायित्व के लिये प्रार्थना
५- देवताओं में लक्ष्मी के वैभव का विस्तार
६- सोम की याचना
७- मनोविकारों का निषेध
८ -लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये प्रार्थना
९ - लक्ष्मी की वन्दना
१० - लक्ष्मीगायत्री

११ - अभ्युदय के लिये प्रार्थना

श्री सूक्त में वर्णित श्री देवी के नाम

श्री सूक्त के मंत्रों में माता लक्ष्मी के ४१ नाम मिलते हैं । यथा १ - हिरण्यवर्णा, २- हरिणी, ३- सुवर्णरजतस्रजा, ४-चन्द्रा, ५- हिरण्मयी, ६- लक्ष्मी, ७ -अनपगामिनी, ८- अश्वपूर्वा,९-रथमध्या, १०-हस्तिनादप्रबोधिनी, ११-श्री, १२- देवी, १३ - का, १४ - सोस्मिता, १५- हिरण्यप्राकारा, १६-आर्द्रा, १७-ज्वलन्ती, १८- तृप्ता, १९- तर्पयन्ती, २०- पद्मे स्थिता, २१- पद्मवर्णा, २२ -प्रभासा, २३- यशसा ज्वलन्ती, २४- देवजुष्टा, २५- उदारा, २६- पद्मनेमि, २७- आदित्यवर्णा २८- गन्धद्वारा, २९- दुराधर्षा, ३०- नित्यपुष्टा,३१- करीषिणी, ३२-ईश्वरी, ३३-माता, ३४- पद्ममालिनी, ३५- पुष्करिणी, ३६- यष्टि, ३७- पिङ्गला, ३८- पुष्टि, ३९- सुवर्णा, ४०- हेममालिनी, ४१- सूर्या

इसके अतिरिक्त परिशिष्ट के ग्यारह मन्त्रों में २९ नाम और मिलते हैं, यथा १- पद्माानना, २- पद्मोरू, ३-पद्माक्षी,४- पद्मसम्भवा, ५- अश्वदायी, ६-गोदायी, ७-धनदायी, ८-महाधना,९- पद्मविपद्मपत्रा, १० -पद्मप्रिया, ११- पद्मदलायताक्षी, १२- विश्वप्रिया, १३- विश्व, १४- मनोनुकूला, १५-सरसिजनिलया, १६- सरोजहस्ता, १७- धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभा,१८-भगवती, १९- हरिवल्लभा, २०- मनोज्ञा, २१- त्रिभुवनभूतिकारी, २२- विष्णुपत्नी, २३- क्षमा, २४- माधवी, २५- माधवप्रिया, २६- प्रियसखी, २७- अच्युतवल्लभा, २८ - महादेवी, २९- विष्णुपत्नी

इन सभी नामों में से माता लक्ष्मी के दो नाम प्रसिद्ध हैं - "श्री" और "लक्ष्मी " जिनमें श्रीदेवी के स्वरूप, रूप, गुण, वैभव आदि का वर्णन इस प्रकार से किया गया है

'श्री' से बताया गया है कि -

१ - सम्पूर्ण जगत् लक्ष्मी के अधीन है ।
२- वे भगवान् की सेवा करती हैं ।
३- वे आश्रितजनों की पुकार सुनती हैं ।
४- वे आश्रितजनों की पुकार को भगवान् तक पहुँचाती हैं।
५- वे आश्रितजनों के मार्ग में आने वाली सारी बाधाओं को दूर करती हैं ।
६-वे आश्रितजनों को समस्त गुणों से सम्पन्न करती हैं।

'लक्ष्मी' शब्द से प्रकट होता है-

१ - वे जगत् के रूप में परिलक्षित होती हैं ।
२ - सभी देवता, मुनि आदि उनकी प्रार्थना करते हैं ।
३ - वे समस्त ऐश्वर्यों की स्वामिनी हैं।

श्री सूक्त में माता के स्वरूप का वर्णन

माता लक्ष्मी प्रकाशमयी देवी हैं । वे सुख स्वरूपा और आनन्दमयी हैं । वे सूर्या हैं अर्थात् सर्वेश्वर के समान समस्त चेतनों एवं अचेतन पदार्थों का व्यापन, भरण एवं पोषण करने

वाली हैं। वह समस्त भूतों की अर्थात् प्राणियों की ईश्वरी हैं । इनका वर्ण पद्म, हिरण्य एवं आदित्य जैसा है । उनका मुख, उनके नेत्र और उनके जंघे कमल जैसे हैं । वे पद्म की, स्वर्ण की एवं चाँदी की माला धारण किए हैं । उनका प्राकट्य कमल से हुआ है । वे कमल में स्थित हैं । उनके करकमल कमल से सुशोभित हैं जो कि शान्ति, दिव्यता एवं आनन्द का प्रतीक है ।

वह भगवती हैं अर्थात् ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति और तेज की निधान हैं । वे दयामयी हैं । क्षमा और उदारता उनके गुण हैं ।

भगवान् श्रियः पति हैं और वे विष्णुपत्नी हैं भगवान् का ज्ञान स्वतः सिद्ध है इसलिए वह जातवेद कहलाते हैं । वे देवताओं के सखा हैं । लक्ष्मी माधवप्रिया हरिवल्लभा अच्युतवल्लभा हैं । लक्ष्मी और नारायण दिव्य-दम्पती हैं ।

श्रीसूक्त में लक्ष्मी की प्रार्थना, स्तुति एवं शरणागति है । लक्ष्मी की शरणागति ग्रहण कर प्रार्थना एवं स्तुति करने से साधक को समस्त पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं ।

॥ श्रीसूक्तम् ॥

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१॥

हे लक्ष्मीपते ! आप उन लक्ष्मी को मेरे अभिमुख करें जो हितैषिणी एवं रमरणीय हैं, समस्त पापों को नाश करने वाली हैं, अनुरूप माला आदि आभूषणों से युक्त हैं, सभी को प्रसन्न करने वाली हैं तथा स्वर्ण आदि समस्त सम्पत्ति की स्वामिनी हैं ॥१॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

हे लक्ष्मीपते ! आपका नित्य अनुगमन करने वाली तथा भक्तों पर अनुग्रह करने वाली माता लक्ष्मी को आप मेरे अभिमुख करें, जिनके सान्निध्य से मैं धातु सम्पत्ति, पशुधन और पुत्र, पौत्र आदि परिजन प्राप्त कर सकूँ ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

मैं उन लक्ष्मी का सान्निध्य प्राप्त करता हूँ जो सर्वव्यापी भगवान् को अग्रगामी बनाये रखती हैं, जीवों के हृदय में तथा भगवान् के वक्षःस्थल में निवास करती हैं तथा गजेन्द्र आदि आश्रित जनों के

आर्तनाद पर द्रवित होती हैं। वह लक्ष्मी देवी मुझ पर प्रसन्न हों ॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

जो सुखस्वरूपा, मन्द मन्द मुस्कराने वाली, स्वर्ण भवन में विराजमान, दयार्द्र, प्रकाश जननी, पूर्णकाम, भक्तों को तृप्त करने वाली, कमल वासिनी एवं पद्म वर्णा हैं, उन लक्ष्मी देवी का मैं यहाँ आहवाहन करता हूँ। ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनेमिं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

मैं उन माता लक्ष्मी की शरण ग्रहण करता हूँ जो आनन्द स्वरूपा हैं, जिनका रूप दिव्य एवं मंगलमय है, जिनका यश सर्वविदित है, जो इस संसार में देवताओं के द्वारा सुपूजित तथा नित्य विभूति में नित्य पार्षदों एवं मुक्तजनों की पूज्य हैं, जो उदारशीला हैं तथा जो कमल में निवास करती हैं । मेरा अज्ञान नष्ट हो जाए इसलिये मैं माता लक्ष्मी को शरण्य के रूप में वरण करण करता हूँ ॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याअलक्ष्मीः ॥६॥

हे आदित्यवर्णे ! आपके संकल्प से वृक्षों का पति बिल्व वृक्ष उत्पन्न हुआ । आप की ही कृपा से उसके फल आपके विरोधी -

अज्ञान, काम क्रोध आदि विघ्नों तथा अलक्ष्मी और उनके सहचारियों को नष्ट करें ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिवृद्धिं ददातु मे ॥७॥

हे लक्ष्मी देवी ! भगवान् नारायण कीर्ति और चिन्तामणि रत्न के साथ मुझे प्राप्त हों। मैं इस राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ । लक्ष्मी कीर्तिवृद्धि मुझे प्रदान करें। ॥७॥

क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान् निर्गुणद में गृहात् ॥८॥

हे देवि ! मैं क्षुधा, पिपासा, मलिनता एवं दुस्सह की पत्नी अलक्ष्मी का निवारण चाहता हूँ । आप अनैश्वर्य एवं समृद्धि को मेरे गृह से दूर करें ॥ ८ ॥

गन्धद्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

मैं उन लक्ष्मी का यहाँ आह्वान करता हूँ जो यश प्रदान करने वाली हैं, साधना से हीन मनुष्यों को प्राप्त न होने वाली हैं, सर्वदा समृद्ध मङ्गलमयी एवं समस्त प्राणियों की अधीश्वरी हैं ॥६॥

मनसः काममाकूतिं वाचस्सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

हे माता लक्ष्मी! मन की कामना, बुद्धि का संकल्प, वाणी की प्रार्थना, पशुधन समृद्धि, अन्न समृद्धि सुस्थिर हो, ऐसी अभिलाषा है । मुझे यश प्राप्त करें। ॥१०॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

हे कर्दम प्रजापते ! उन माता लक्ष्मी को मेरे यहां प्रतिष्ठित करें जिनको आपने कन्या के रूप में स्वीकार किया है । पद्ममाला धारण करने वाली उन माता लक्ष्मी को मेरे कुल मैं प्रतिष्ठित करें ॥ ११ ॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

हे चिक्लीत ! भगवान् के आयतन भूत जल, घृत आदि को मेरे गृह में उत्पन्न करें। आप मेरे गृह में निवास करें और प्रकाश मयी माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराएं ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥

हे लक्ष्मीपते ! उन माता लक्ष्मी को मेरे अभिमुख करें जिनका हृदय आर्द्र है, जो कमल में निवास करती हैं, जो यज्ञस्वरूपा हैं, पिंगलवर्ण वाली हैं, भक्तजनों को आह्लादित करने वाली हैं तथा स्वर्ण आदि की स्वामिनी हैं ॥१३॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममाऽऽवह ॥१४॥

हे लक्ष्मीपते ! उन माता लक्ष्मी को मेरे अभिमुख करें जिनका हृदय आर्द्र है, जो कमल में निवास करती हैं, जो पुष्टिस्वरूपा हैं, स्वर्णमयी हैं, स्वर्णपुष्पों की माला धारण करने वाली हैं, जो आपके समान समस्त चेतनों एवं अचेतन पदार्थों का व्यापन भरण एवं पोषण करने वाली हैं तथा जो स्वर्ण आदि की स्वामिनी हैं। ॥१४॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

हे लक्ष्मीपते ! आपका नित्य अनुगमन करने वाली लक्ष्मी को आप मेरे अभिमुख करें जिनके सान्निध्य से मैं अपार धातु, सम्पत्ति, पशुधन, सेवक-सेविकाओं, अश्व आदि वाहन सम्पत्ति तथा पुत्र पौत्र आदि प्राप्त करूँ ॥१५॥

यश्शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

जिस व्यक्ति को लक्ष्मी के अनुग्रह की कामना हो वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन घृत से होम करे और उसके साथ इन १५ ऋचाओं का निरन्तर पाठ करे ॥१६॥

परिशिष्ट:

॥ लक्ष्मी सूक्तम्॥

पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ १॥

हे लक्ष्मी ! आपका मुख कमल के समान है, आपके जंघे व नेत्र कमल के समान हैं । आपका प्रादुर्भाव कमल में हुआ है । आप मुझ पर कृपा करें जिससे कि मैं सुख प्राप्त करूँ।

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥२॥

हे देवि ! आप अश्व, गौ एवं धन देने वाली हैं । हे सर्वेश्वर ! मुझे धन प्रदान करें तथा मेरी समस्त कामनायें पूर्ण करें ।

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥ ३ ॥

हे लक्ष्मी ! आपका मुख कमल के समान है, आप कमल पर निवास करती हैं, कमल आपको प्यारा है, कमलदल के समान आप के नेत्र हैं, आप विश्व पर कृपा करती हैं श्रीय विश्वशब्दवाच्य भगवान् के अनुकूल रहती हैं। अपने चरण कमल को मेरे हृदय में प्रतिष्ठित करें ।

पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥४॥

हे लक्ष्मि ! आप समस्त प्रजा की माता हैं । पुत्र, पौत्र, वन, धान्य, हाथी, घोड़े यादि एवं गोरथ इन सबको मेरे लिये चिरस्थायी करें ।

धनमग्निर्धनं वायुः धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणं धनमस्तु ते ॥ ५॥

हे लक्ष्मि ! अग्नि, वायु, सूर्य अष्टवसु, इन्द्र, वृहस्पति एवं वरुण तुम्हारी सम्पत्ति हैं ।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ ६ ॥

वैनतेय सोमपान करें । इन्द्र सोमपान करें। मुझ माता लक्ष्मी के कृपा पात्र को भगवान् सोम प्रदान करें ।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्त जपेत् ॥७॥

पुण्यशील भक्तजनों को क्रोध, मात्सयं, लोभ एवं अशुभ विचार नहीं होता । अतः श्रीसूक्त का जप कर्तव्य है ।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतकरि प्रसीद मह्यम् ॥ ८॥

हे भगवति ! आप कमल में वास करती हो, आपके हाथ में कमलपुष्प हैं, आप प्रति श्वेतवस्त्र, चन्दन एवं माला से सुशोभित हैं, आप भगवान् की प्रेयसी हो, सुन्दर हो तथा त्रिलोकी को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो, आप मुझ पर प्रसन्न हों ।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥६॥

हे लक्ष्मी ! आप विष्णु पत्नी हैं, दयामयी हैं, प्रकाशमयी हैं, माधव की प्रिया माधवी हैं, लक्ष्मी हैं, विष्णु की प्रिय संगिनी हैं विष्णु की प्रेयसी हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

महादेव्यै च विद्महे, विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१०॥

हम महादेवी का ज्ञान प्राप्त करते हैं, विष्णुपत्नी का ध्यान करते हैं, वह लक्ष्मी हमारी बुद्धि को भगवान् की ओर प्रेरित करें।

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशु बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ ११ ॥

श्री शब्दवाच्या लक्ष्मी तेज, आयु, आरोग्य, धान्य, धन पशु अनेक सन्तान एवं सौ वर्ष का दीर्घ जीवन मुझे प्रदान करें ।

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।